Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

मजिलिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अगस्त/2021ई०

MONTHLY

ANSARULLAH

QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

AUGUST-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

29 जून 2021 को आयोजित ऑनलाइन मीटिंग में केरल के आदरणीय नाज़िमीन भाग लेते हुए एक दृश्य।

29 जून 2021 को श्री एम ताजुद्दीन साहब उपाध्यक्ष दक्षिण भारत केरल के आदरणीय नाज़िमीन के साथ ऑनलाइन मीटिंग करते हुए।

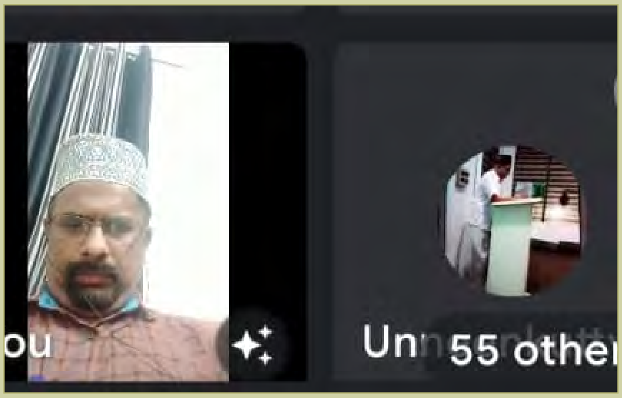

25 जुलाई 2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला मलप्पुरम (केरल) द्वारा आयोजित ऑनलाइन तरबियती मीटिंग में श्री पि पि मुसद्दिक़ अहमद साहब नाज़िम भाषण देते हुए।

25 जुलाई 2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िल्ला मलप्पुरम (केरल) द्वारा आयोजित ऑनलाइन तरबियती मीटिंग में श्री एच शम्सुद्दीन साहब क़ाइद तरबियत मज्लिस अंसारुल्लाह भारत भाषण देते हुए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ
سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 | अगस्त 2021 | **Issue - 8**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफ़ैल अहमद शहबाज़
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - तुम्हारे पास क़ुर्आन का हथियार होना चाहिए।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन कुर्आन क़रीम के महान प्रभाव	6
किताब लैक्चर लाहौर (प्रश्न उत्तर के रूप में)	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن كريم दर्सुल क़ुर्आन

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُم مَّوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ

(सूर: यूनुस आयत 58-59)

अनुवाद - हे लोगो ! तुम्हारे रब्ब की तरफ से एक ऐसी किताब आ गई है जो साक्षात नसहीत है। और वह सीनों में पाई जाने वाली बीमारियों को शिफा देने वाली है। और ईमान लाने वालों के लिए हिदायत और रहमत है। हे रसूल लोगों को सूचित करो कि यह अल्लाह के फज़्ल तथा रहमत से है अत: इस नेअमत की प्राप्ति पर उन्हें ख़ुश नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह किताब उस माल से जो जमा कर रहे हैं कहीं बेहतर है।

दर्सुल हदीस

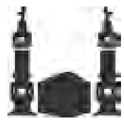

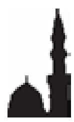

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ اللهِ يَتْلُونَ كِتَابَ اللهِ يَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمُ السَّكِينَةُ وَغَشِيَتْهُمُ الرَّحْمَةُ وَحَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ وَذَكَرَهُمُ اللهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ - (सुनन अबू दाऊद हदीस नम्बर 1455)

अनुवाद - हज़रत अबु हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। " जो भी क़ौम(जमाअत) अल्लाह के घरों अर्थात मस्जिदों में से किसी घर अर्थात मस्जिद में जमा हो कर किताबल्लाह की तिलावत करती है और आपस में पढ़ती पढ़ाती है उस पर सन्तोष नाज़िल होता है। उसे अल्लाह की रहमत ढांप लेती है फरिश्ते उसे घेरे में ले लेते हैं और अल्लाह तआला उस का ज़िक्र उन लोगों में करता है जो उस के पास रहते हैं अर्थात फरिश्तों में।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

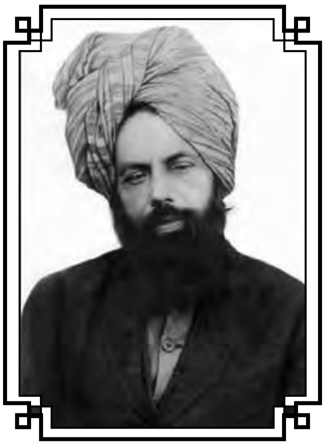

"क़ुर्आन बहुत से अमूल्य हीरे मोती अपने भीतर रखता है।

"सब से सीधा मार्ग और बड़ा साधन जो विश्वास के प्रकाशों और निरन्तरता से भरा हुआ तथा हमारी आध्यात्मिक भलाई और ज्ञान संबंधी उन्नति के लिए पूर्ण पथ-प्रदर्शक है। पवित्र क़ुर्आन है जो समस्त संसार के धार्मिक विवादों का निर्णय करने का अभिभावक होकर आया है जिसकी एक-एक आयत और एक-एक शब्द अपने साथ सहस्त्रों प्रकार की निरन्तरता रखता है तथा जिसमें हमारे जीवन के लिए बहुत सा अमृत भरा हुआ है और बहुत से बहुमूल्य और दुर्लभ रत्न अपने अन्दर गुप्त रखता है जो प्रतिदिन प्रकट होते जाते हैं। यही एक उत्तम मापदण्ड है जिसके द्वारा हम सत्य और असत्य में अन्तर कर सकते हैं। यही एक प्रकाशमान दीपक है जो सत्य मार्गों की ओर मार्ग दर्शन करता है। निस्सन्देह जिन लोगों की सद्मार्ग से अनुकूलता और एक प्रकार का संबंध है उनका हृदय पवित्र क़ुर्आन की ओर खिंचा चला आता है और दयालु ख़ुदा ने उनके हृदय ही इस प्रकार के बना रखे हैं कि वह प्रेमी की भांति अपने उस प्रियतम की ओर झुकते हैं और उसके बिना किसी स्थान पर चैन नहीं पाते तथा उससे एक साफ़ और स्पष्ट बात सुनकर फिर किसी दूसरे की नहीं सुनते। उसकी प्रत्येक सच्चाई को प्रसन्नतापूर्वक और शीघ्र स्वीकार कर लेते हैं और अन्तत: वही है जो चमकने और हृदय की बात जानने का कारण हो जाता है और अद्भुत से अद्भुत प्रकटनों का माध्यम ठहरता है तथा प्रत्येक को उसकी योग्यतानुसार उन्नति पर पहुंचाता है। सदात्माओं को पवित्र क़ुर्आन के प्रकाशें के अधीन चलने की सदैव आवश्यकता रही है तथा जब कभी युग की किसी नवीन अवस्था ने इस्लाम को किसी अन्य धर्म के साथ टकरा दिया है तो वह तेज़ और काम आने वाला अस्त्र जो तुरन्त काम आया है पवित्र क़ुर्आन ही है। इसी प्रकार जब कहीं दार्शनिक विचार विरोधी रूप में प्रचारित होते रहे तो उस अपवित्र पौधे का समूल विनाश अन्तत: पवित्र क़ुर्आन ही ने किया और उसे ऐसा तिरस्कृत और अपमानित करके दिखाया कि दर्शकों के आगे दर्पण रख दिया कि **सच्चा दर्शन यह है न कि वह**। वर्तमान युग में भी जब पहले-पहले ईसाई धर्मोपदेशकों ने सर उठाया और निर्बुद्धि तथा मूर्ख लोगों को एकेश्वरवाद से हटाकर एक असहाय व्यक्ति का उपासक बनाना चाहा और अपनी अशुद्ध पद्धति को अपने वास्तविकता से दूर भाषणों से सुसज्जित करके उनके आगे रख दिया और हिन्दुस्तान में एक तूफ़ान मचा दिया। अन्तत: पवित्र क़ुर्आन ही था जिसने उन्हें ऐसा पराजित किया कि अब वे लोग किसी परिचित व्यक्ति को मुंह ही नहीं दिखा सकते और उनके लम्बे-चौड़े बहानों को यों पृथक करके रख दिया जिस प्रकार कोई काग़ज़ का तख़्ता लपेटे।"

(भाग 5 पृष्ठ 398-399)

सम्पादकीय

तुम्हारे पास कुर्आन का हथियार होना चाहिए।

कुरआने करीम ने शुरू में ही اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ का ऐलान कर दिया। जिस तरह शारीरिक रूप से ख़ुदा की बरकतें सबको पहुंचती हैं इसी तरह उस के रुहानी बरकतें भी सबको पहुंचती हैं। इस ख़्याल से कुफ़्फ़ार ने आश्चर्य का इज़हार कर दिया कि أَجَعَلَ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ (साद 6)कि उसने तो कई ख़ुदाओं को कूट-कूट कर एक ख़ुदा बना दिया है।(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7 पृष्ठ 259) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करके अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا (अल्आराफ 159) अर्थात तू कह दे कि ए इन्सानो! अवश्य मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ। जबकि हज़रत मूसा अलाहिस्सलाम ने बनी इस्राईल के ख़ुदा को प्रस्तुत किया और हज़रत मसीह ने कहा कि बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों को इकट्ठा करने आया हूँ। अन्य समस्त धर्म विशेष जाति और विशेष युग के लिए थे। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐलान फ़रमाया कि بُعِثْتُ اِلٰی كُلِّ اَحْمَرَ وَّاَسْوَدَ मैं प्रत्येक गोरे और काले सबकी ओर भेजा गया हूँ। (मुस्लिम किताबुल मसाजिद)एक स्थान पर आप फ़रमाते हैं।وَكَانَ النَّبِيُّ يُبْعَثُ إِلَى قَوْمِهِ خَاصَّةً، وَبُعِثْتُ إِلَى النَّاسِ عَامَّةً कि समस्त अंबिया अपनी अपनी क़ौम के लिए भेजे जाते थे लेकिन मैं समस्त इन्सानों के लिए आम तौर पर नबी बना कर भेजा गया हूँ।

(बुख़ारी, किताबुल तयम्मुम हदीस 335)

इस्लाम विश्वव्यापी और इस्लाम के संस्थापक हज़रत अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आसमानी रसूल हैं। इस्लाम का इलाही कलाम क़ुरआन करीम भी विश्वव्यापी है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जानना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन का खुला-खुला चमत्कार जो हर जाति और हर मातृ-भाषा के माहिर पर स्पष्ट हो सकता है जिसे प्रस्तुत करके हम प्रत्येक देश के मनुष्य को चाहे वह हिन्दुस्तानी हो, पारसी हो, यूरोपियन या अमरीकन अथवा किसी अन्य देश का निवासी हो को दोषी और निरुत्तर कर सकते हैं वह असीमित आध्यात्म ज्ञानों, सच्चाईयों, तथा पवित्र क़ुर्आन के दर्शन संबंधी ज्ञान हैं तथा प्रत्येक युग की विचारधारा का सामना करने के लिए हथियारबन्द सिपाहियों की भाँति खड़े हैं।"

(इज़ाला औहान, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 255)

मज्लिस अन्सारुल्लाह के संस्थापक अल्लाह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं

"क़ुरआन शरीफ़ एक सार गर्भित किताब है इस में से सब कुछ मालूम हो सकता है। शर्त यह है कि यतन और चिन्तन से पढ़ा जाए...। मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल से और सिर्फ क़ुरआन मजीद पढ़ने के कारण हर एक बड़े इन्सान से, अन्य धर्मों के पेशवाओं से, बड़े बड़े लैक्चरारों और विचारकों से बातचीत करने पर कभी भी नहीं झिझका और न किसी बड़े से बड़े लैक्चरार, प्रिंसिपल, बिशप तक ने मेरे सामने कभी बातचीत का साहस किया परन्तु यह मेरे ज़हन की कोई ख़ूबी नहीं। बल्कि मेरे पास क़ुरआन की तलवार है। अत: अगर तुम भी क़ुरआन, हदीस और अहमदियत की किताबें

पढ़ोगे तो पता लगेगा कि इस्लाम कैसा उत्तम धर्म है तुम्हारे पास क़ुरआन का हथियार होना चाहिए''।

(अन्वारुल उलूम भाग नम्बर 12 पृष्ठ 556)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"आँहज़रत सल्लल्लाहो ही एक कामिल नबी हैं जिनको अल्लाह तआला ने एक तो समस्त मानवता के लिए भेजा और आप ही वह सम्पूर्ण नबी हैं जिनको क़यामत तक का ज़माना प्रदान फ़रमाया गया है। और आप पर उतरने वाली किताब क़ुरआन करीम ही वह सम्पूर्ण किताब है जो अपने अन्दर पुरानी तारीख़ भी लिए हुए है,नए आदेश भी लिए हुए है और सांसारिक दृष्टि से जो नए अविष्कार हैं उनकी पेश ख़बरी भी पहले से क़ुरआन करीम ने दे दी है और जैसे-जैसे कोई नई खोज होती जाती है इस का समर्थन क़ुरआन करीम से मिलता जाता है। "

(ख़ुत्बा जुमा 2 जनवरी 2009 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें क़ुरआन करीम के हथियार से लैस हो कर सारे संसार में तौहीद, इन्सानियत और वास्तविक शान्ति क़ायम करने वाले हों।

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout, Kasturi Nagar, BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

क़ुरआन करीम के महान प्रभाव

क़ुरआन करीम की रुहानी तथा जिस्मानी प्रभाव

इस्लाम के आरम्भ से ले कर आज तक लोग के क़ुरआन करीम के प्रभावों से प्रभावित हो कर इस्लाम स्वीकार करने के कई ईमान वर्धक घटनाएं हमें मिलती हैं। वास्तव में क़ुरआन करीम एक ज़िन्दा चमत्कार है जो क़यामत तक नेक रूहों की हिदायत का कारण बना रहेगा। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद की शान तथा शौकत और रुहानी तथा सांसारिक प्रभाव डालने वाली शक्ति को वर्णन करते हुए फ़रमाता है। لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ (अल-हश्र: आयत 22) अर्थात अगर हम ने इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू ज़रूर देखता कि वह अल्लाह के ख़ौफ़ से विनम्रता धारण करते हुए टुकड़े टुकड़े हो जाता।

हदीसों से पता चलता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि पर क़ुरआन सुनने के समय विनय तथा रोने की हालत छा जाती थी। अत: हज़रत ज़ैद रज़ि बिन असलम वर्णन करते हैं कि एक बार हज़रत उबई बिन कअब रज़ि ने रसूले करीम की मौजूदगी में सहाबा रज़ि को क़ुरआन की तिलावत सुनाई तो सब पर रोने की अवस्था छा गई। रसूले करीम ने फ़रमाया, रोने के वक़्त दुआ को ग़नीमत जानो क्योंकि यह भी रहमत है। (तफसीर कुरतबी भाग 15 पृष्ठ 250)

हज़रत इमाम राज़ी ने क़ुरआन के शिफ़ा होने से कुफ़्र की बीमारी का दूर होना। इसी तरह जिस्मानी बीमारियों से शिफ़ा भी अभिप्राय लिया है।

(अर्राज़ी भाग 1 पृष्ठ 281)

इस्लाम स्वीकार करने की ईमान वर्धक घटनाएं

(1)हज़रत उमर बिन ख़त्ताब की घटना हमारे सामने है।(2)तुफ़ैल बिन अमरो अद्दौसी का सम्बन्ध यमन के क़बीला दौस से था। आप एक शायर थे। उन्होंने सूरा इख़लास, सूरत अल-फ़लक़ और सूरत अन्नास की तिलावत रसूले करीम से सुन कर इस्लाम क़बूल करने का सौभाग्य प्राप्त किया। (3) क़ैस बिन अल-हज़ीम अन्सारी औस क़बीला के मशहूर शायर थे। इन का इस्लाम क़बूल करना भी क़ुरआन सुनने के नतीजा में था। आप ने वापस जाकर अपने क़बीला में बताया कि मैंने ऐसा अजीब कलाम सुना है जो पहले कभी नहीं सुना।

(अल-असाब तमीज़िस्सहाबा 5 पृष्ठ 557)

क़ुरआन करीम के प्रभाव निरन्तर हैं।

कुरआन के प्रभावों का सम्बन्ध केवल पिछले ज़माना से नहीं बल्कि अगले ज़माना से भी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"फिर चौथा चमत्कार क़ुरआन शरीफ़ का उस के रुहानी प्रभाव हैं जो हमेशा इस में महफ़ूज़ चले आते हैं अर्थात यह कि इस के अनुकरण करने वाले इलाही क़बूलीयत के स्तर को पहुंचते हैं और अल्लाह तआला से बातचीत से मुशर्रफ़ किए जाते हैं। ख़ुदा तआला उन की दुआओं को सुनता और

उन्हें मुहब्बत और रहमत की राह से जवाब देता है और कुछ भविष्य के भेदों पर नबियों की तरह उन को सूचित करता है और अपनी सहायता और मदद के निशानों से दूसरी मख़लूक़ात से उन्हें स्पष्ट करता है।"

(एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 4 पृष्ठ 449)

आज भी हमें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बार-बार ध्यान दिला रहे हैं कि क़ुरआन करीम के प्रभावों और शिक्षाओं को अपने कर्मों के माध्यम से दुनिया के सामने प्रस्तुत करें। अत: आप फरमाते हैं।

"जब ख़ुदा भी वही क़ुद्दूस (पवित्र) है तो जो उस की तरफ़ बढ़ने की कोशिश करे वह उस से फ़ैज़ पाता है। उस के रसूल के प्रभाव भी क़ायम हैं, उस की किताब के प्रभाव भी क़ायम हैं, इस ज़माने में उस ने अपने मसीह तथा मह्दी की क़ुव्वत क़ुदसी के नज़्ज़ारे भी हमें दिखा दिए और दिखा रहा है। यह सब बातें हमें उस क़ुद्दूस ख़ुदा के गुणों से लाभान्वित होने वाला बनाने वाला होनी चाहिऐं। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।"

(ख़ुत्बा जुम्अ दिनांक 20 अप्रैल 2007 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें क़ुरआन करीम की शिक्षाओं पर अनुकरण करने और सारी दुनिया को पहुंचाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631
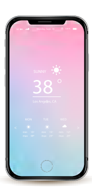
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

किताब लैक्चर लाहौर

(प्रश्न तथा उत्तर के रूप में) (जुलाई- अगस्त 2021 ई)

(मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

सवाल 1: किताब लैक्चर लाहौर किस की रचना है?

जवाब: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी मसीह मौऊद मह्दी माहूद अलाहिस्सलाम की।

सवाल 2: लैक्चर लाहौर कब और कहाँ पढ़ा गया और इस में सुनने वालों की संख्या कितनी थी?

जवाब: यह लैक्चर 3 सितम्बर 1904 ई को हर धर्म के मानने वालों की भीड़ में लाहौर में एक महान जलसा में पढ़ा गया। अख़बार आम तथा पंजा फ़ौलाद इत्यादि के अनुसार जलसा में शामिल होने वालों की संख्या दस बारह हज़ार से भी अधिक थी।

सवाल 3: यह निबन्ध हुज़ूर अलाहिस्सलाम ने किस के मुक़ाबला में लिखा ?

जवाब: हकीम मिर्ज़ा महमूद नामक ईरानी मसीहीयत का दावा करने वाले के मुक़ाबला में।

सवाल 4: हुज़ूर अलाहिस्सलाम ने किताब लैक्चर लाहौर के शुरू में ख़ुदा तआला के शुक्र के साथ साथ गर्वनमैंट अंग्रेज़ी का किस बात पर शुक्रिया अदा किया?

जवाब: फ़रमाया: मैं उस ख़ुदा का शुक्र करता हूँ जिसने ऐसी शान्ति वाली गर्वनमैंट के छाया में हमें स्थान दिया है जो हमें अपने मज़हब के प्रचार से नहीं रोकती और अपने न्याय तथा इन्साफ से हर एक कांटा हमारी राह से दूर करती है। अत: हम ख़ुदा के शुक्र के साथ इस गर्वनमैंट का भी शुक्र करते हैं।

सवाल 5: विभिन्न फ़िर्क़ों और धर्मों में मतभेद का कारण हुज़ूर अलाहिस्सलाम ने क्या वर्णन फ़रमाया?

जवाब: फ़रमाया: वह बात जो इस अत्याकि मतभेद का कारण है वह वास्तव में एक ही है और वह यह है कि प्राय इन्सानों के अंदर से रूहानियत और ख़ुदा तआला को पहानने की शक्ति कम हो गई है। और वह आसमानी नूर जिसके माध्यम से इन्सान सच्चाई और मिथ्या में अन्तर कर सकता है वह लगभघ बहुत से दिलों में से जाता रहा है। और दुनिया एक नास्तिकता का रंग पकड़ती जाती है।

सवाल 6: मज़हब की वास्तविक रूह हुज़ूर अलाहिस्सलाम ने क्या वर्णन फ़रमाई।

जवाब: दिल की वास्तविक पवित्रता और ख़ुदा तआला की सच्ची मुहब्बत और उस की सृष्टि की सच्ची हमदर्दी और दया और रहम और इन्साफ़ और विनम्रता और अन्य समस्त पवित्र आचरण और तक़्वा और नेकी और सच्चाई मज़हब की रूह है।

सवाल 7: मज़हब का मूल उद्देश्य हुज़ूर अलाहिस्सलाम ने क्या वर्णन फ़रमाया है।

जवाब: फ़रमाया: मज़हब का मूल उद्देश्य उस सच्चे ख़ुदा का पहचानना है जिसने इस समस्त जगत को पैदा किया है और इस की मुहब्बत में इस स्तर तक पहुंचना है जो ग़ैर की मुहब्बत को जला देता है और उस की सृष्टि से हमदर्दी करना है और हक़ीक़ी पवित्रचा का लिबास पहनना है।

सवाल 8: आजकल दुनिया में गुनाह की अधिकता का क्या कारण है?

जवाब: आजकल दुनिया में गुनाह की अधिकता का कारण अल्लाह तआला की मार्फ़त की कमी है।

सवाल 9 :सच्चे मज़हब की निशानियों में से एक महान निशानी क्या है?

जवाब: सच्चे मज़हब की निशानियों में से यह एक

महान निशानी है कि ख़ुदा तआला की मार्फ़त और इस की पहचान के माध्यम बहुत से इस में मौजूद हूँ ताकि इन्सान गुनाह से रुक सके।

सवाल 10: वह कौन सी राहत है जिसको हम बहिश्ती ज़िन्दगी से ताबीर कर सकते हैं?

जवाब: गुनाह से बचना और ख़ुदा तआला की मुहब्बत में लीन हो जाना इन्सान के लिए एक महान लक्ष्य है और यही वह राहत हक़ीक़ी है जिसको हम बहिश्ती ज़िन्दगी से ताबीर कर सकते हैं।

सवाल 11: किन इच्छाओं की पैरवी में ज़िंदगी व्यतीत करना एक जहन्नुमी ज़िन्दगी है?

जवाब: समस्त ख़्वाहिशें जो ख़ुदा की रज़ामंदी के विरोधी हैं दोज़ख़ की आग हैं। और उन ख़्वाहिशों के अनुकरण में जीवन व्यतीत करना एक जहन्नुमी ज़िंदगी है।

सवाल 12: जहन्नुमी ज़िन्दगी से नजात किस पर आधारित है?

जवाब: जहन्नुमी ज़िंदगी से नजात ऐसी इलाही मार्फत पर आधारित है जो हक़ीक़ी और सम्पूर्ण हो।

सवाल 13: गुनाह से नजात के लिए हम किस के मुहताज हैं?

जवाब: हम इस नजात के लिए न किसी ख़ून के मुहताज हैं और न किसी सलीब के हाजत-मंद और न किसी कफ़्फ़ारा की हमें ज़रूरत है बल्कि हम सिर्फ एक क़ुर्बानी के मुहताज हैं जो अपने नफ़स की क़ुर्बानी है।

सवाल 14:किताब लैक्चर लाहौर में हज़ूर ने इस्लाम के अर्थ क्या वर्णन फ़रमाए हैं?

जवाब इस्लाम के अर्थ हैं ज़बह होने के लिए गर्दन आगे रख देना अर्थात सम्पूर्ण रज़ा के साथ अपनी रूह को ख़ुदा के आस्ताना पर रख देना यह प्यारा नाम सारी शरीयत की रूह और समस्त अहकाम की जान है। ज़बह होने के लिए अपनी हार्दिक ख़ुशी और रज़ा से गर्दन आगे रख देना कामिल मुहब्बत और कामिल इश्क़ को चाहता है और कामिल मुहब्बत कामिल मार्फ़त को चाहती है।

सवाल 15: मज़हब इस्लाम के समस्त उपदेशों का मूल उद्देश्य क्या है?

जवाब: मज़हब इस्लाम के समस्त उपदेशों का मूल उद्देश्य यही है कि वह हक़ीक़त जो इस्लाम शब्द में छुपी है इस तक पहुंचाया जाए। इसी उद्देश्य की दृष्टि से क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी शिक्षाएं हैं कि जो ख़ुदा को प्यारा बनाने के लिए कोशिश कर रही हैं।

सवाल16: ख़ुदा की रहमतें कितनी प्रकार की हैं और पहली किस्म क्या है?

जवाब: इस की रहमतें दो प्रकार की हैं (1)एक वह जो बिना कर्म के होने के किसी कर्ता के अनादि से प्रकट हो रही हैं जैसा कि ज़मीन और आसमान और सूरज और चांद और सितारे और पानी और आग और हुवा और समस्त कण इस जगत के जो हमारे आराम के लिए बनाए गए। ऐसा ही जिन जिन चीज़ों की हमें ज़रूरत थी वे समस्त चीज़ें हमारे जन्म से पहले ही हमारे लिए उपलब्ध हो गईं।

सवाल 17: दूसरी किस्म की रहमत क्या है?

जवाब: दूसरी रहमत वह है जो कर्मों पर आधारित होती है।

सवाल 18: ख़ुदा तआला की तौहीद कब तक स्थापित नहीं हो सकती?

जवाब: उस की तौहीद स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि वह अपनी ज़ात की तरह अपने समस्त गुणों में अनुपमीय की तरह न हो।

सवाल 19: कर्मों के बारे में कौन सी सारगर्भित आयत अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन फ़रमाई है?

जवाब: कर्मों के बारे में यह आयत सारगर्भित क़ुरआन शरीफ़ में है

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِى

الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ

(सूरत अन्नहल 91)अर्तात ख़ुदा तुम्हें हुक्म देता है कि इन्साफ़ करो और न्याय पर क़ायम हो जाओ। और यदि इस से अधिक सम्पूर्ण बनना चाहो तो फिर उपकार करो। अर्थात ऐसे लोगों से व्यवहार और नेकी करो जिन्होंने तुमसे कोई नेकी नहीं की और अगर इस से भी ज़्यादा परपूर्ण बनना चाहो तो केवल व्यक्तिगत हमदर्दी से और केवल अपने जोश से बिना किसी शुक्रिया उपकार करने के मानव जाति से नेकी करो। जैसा कि माँ अपने बच्चे से केवल अपने क़ुदरती जोश से नेकी करती है और फ़रमाया कि ख़ुदा तुम्हें इस से मना करता है कि कोई ज़्यादती करो या उपकार बतलाओ या सच्ची हमदर्दी करने वाले की नेमत का इन्कार करो।

सवाल 20: इस्लाम के सच्चे अनुयायियों को ख़ुदा तआला ने किस का वारिस ठहराया है और किस दुआ को स्वीकार किया है?

जवाब: वास्तव में इस्लाम वह धर्म है जिसके सच्चे अनुयायियों को ख़ुदा तआला ने समस्त पिछली सच्चाइयों का वारिस ठहराया है और उनको विभिन्न नेअमतें इस रहम वाली उम्मत को प्रदान कर दी हैं। और उसने इस दुआ को स्वीकार कर लिया है जो क़ुरआन शरीफ़ में आप सिखलाई थी और वह यह है। {اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (٦) صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ 6 हमें वह मार्ग दिखा जो उन रास्तबाज़ों का मार्ग है जिन पर तूने प्रत्येक इनाम किया है। अर्थात जिन्होंने तुझ से हर एक प्रकार की बरकतें पाई हैं।

सवाल 21: इस परोक्ष ख़ुदा पर कब तक विश्वास प्राप्त नहीं हो सकता?

जवाब: जब तक उस की तरफ़ से मैं मौजूद की आवाज़ न सुनी जाए और जब तक कि इन्सान उस की तरफ़ से खुले-खुले निशान देख न ले।

सवाल 22: अक्ली तर्कों से ख़ुदा के वजूद का पता लगाना किस सीमा तक है?

जवाब: अक़्ली तर्कों से ख़ुदा के वजूद का पता लगाना केवल इस सीमा तक है कि नेक अक़्ल ज़मीन और आसमान और उनकी उच्च क्रमता और सुदृढ़ता को देखकर यह परामर्श देती है कि इन हिकमत वाली चीज़ों का कोई बनाने वाला होना चाहिए। परन्तु यह दिखला नहीं सकते कि वास्तव में बनाने वाला है भी।

सवाल 23: इस ज़माना में कौन सा धर्म सच्चा है?

जवाब: धर्म वही सच्चा है जो पूर्ण विश्वास के द्वारा ख़ुदा को दिखला सकता है। और अल्लाह तआला से वार्तालाप के स्तर तक पहुंचा सकता है और ख़ुदा से बात करने सा सौभाग्य प्रदान कर सकता है और इस तरह अपनी रूहानी शक्ति और रूह को बढ़ाने वाली ताकत से दिलों को गुनाह के अन्धकार से छुड़ा सकता है और इस के अतिरिक्त सब धोखा देने वाले हैं।

सवाल 24: हुज़ूर अलैहिस्सलाम क्या फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला की मार्फ़त तक पहुंचाने के लिए मसीहीयों के हाथ में क्या है?

जवाब ख़ुदा तआला की मार्फ़त के बारे में मसीहीयों के हाथ में कोई बात साफ़ नहीं है। वह्य के सिलसिला पर तो पहले से मुहर लग चुकी है और मसीह और हव्वारियों के बाद चमत्कार भी बंद हो गए हैं। रहा अक़्ली तरीक़ा। अत: आदम से उत्पन्न को ख़ुदा बनाने में वह तरीक़ा भी हाथ से गया।

सवाल 25: कौन सी शिक्षा सम्पूर्ण होती है और वह कहाँ है?

जवाब शिक्षा सम्पूर्ण वह होती है जो समस्त इन्सानी शक्तियों की परवरिश करे। न केवल यह कि केवल एक पहलू पर अपना सारा ज़ोर डाल दे। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि यह सम्पूर्ण शिक्षा मैंने क़ुरआन शरीफ़ में ही पाई है। वह हर एक बात में सच्चाई और हिक्मत को समक्ष रखता चला जाता है।

....

2021 जुन महीने में मज्लिस अंसारुल्लाह चेलाकरा (केरल) द्वारा मस्जिद में आयोजित श्रमदान में अंसार भाग लेते हुए एक दृश्य।

तिथि 21-7-2021 को मज्लिस अंसारुल्लाह चिन्ताकुन्टा कि और से एक पोलीस अधिकारि को इस्लाम अहमदिय्या जमाअत का सन्देश देते हुए।

2021 जुन महीने में मज्लिस अंसारुल्लाह चेलाकरा (केरल) द्वारा गरीबों में तक़सीम करने के लिए अंसार अनाज के पैकेट बनाते हुए एक दृश्य।

2021 जुन महीने में मज्लिस अंसारुल्लाह चेलाकरा (केरल) द्वारा गरीबों में तक़सीम करने के लिए अंसार अनाज के पैकेट बनाते हुए एक दृश्य।

2021 जुन महीने में मज्लिस अंसारुल्लाह मूसाबनीमैंस (झारखंड) द्वारा मस्जिद में आयोजित श्रमदान में अंसार भाग लेते हुए एक दृश्य।

2021 जुन महीने में मज्लिस अंसारुल्लाह एडाप्पल ज़िल्ला मलप्पुरम (केरल) द्वारा मस्जिद में आयोजित श्रमदान में अंसार भाग लेते हुए एक दृश्य।